Terms of Trade

व्यापार की शर्तों का अर्थ — जिस दर पर एक देश की वस्तुओं का विनिमय दूसरे देश की वस्तुओं से होता है उसे व्यापार की शर्तें कहा जाता है। अन्य शब्दों में, दो देशों में जिन दो वस्तुओं का विदेशी व्यापार किया जाता है उनके भौतिक विनिमय अनुपात को व्यापार की शर्तें कहा जाता है। जब दो से अधिक वस्तुओं का व्यापार किया जाता है तो हम कह सकते हैं कि व्यापार की शर्तों का सम्बन्ध उस दर से होता है जिस पर आयातों और निर्यातों का विनिमय किया जाता है। इसे हम एक सूत्र से बता सकते हैं —

व्यापार की शर्तें = आयात का कुल मूल्य / निर्यात का कुल मूल्य

किसी देश के लिए व्यापार की शर्तें अनुकूल भी हो सकती हैं और प्रतिकूल भी। एक देश के लिए व्यापार की शर्तें उस समय अनुकूल होती हैं जब उसके आयातों के मूल्य की तुलना में उसके निर्यातों का मूल्य अधिक होता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि जब दी हुई आयात की मात्रा के लिए कम वस्तुओं का निर्यात किया जाता है तब व्यापार की शर्तें अनुकूल होती हैं।

और जब एक देश के लिए व्यापार की शर्तें उस समय प्रतिकूल होती हैं जब उसके निर्यातों के मूल्य की तुलना में आयातों का मूल्य अधिक होता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि जब दी हुई आयात की मात्रा के लिए अधिक वस्तुओं का निर्यात किया जाता है तो व्यापार की शर्तें प्रतिकूल होती हैं।

रिकार्डो ने अपने सिद्धान्त में विदेशी व्यापार के लाभ के सम्बन्ध में व्यापार की शर्तों का कोई उल्लेख नहीं किया है। जे.एस. मिल ने अपने प्रतिपूरक मांग के सिद्धान्त में पहली बार व्यापार की शर्तों का उल्लेख किया है। प्रो. मिल ने स्पष्ट किया कि व्यापार से एक देश को जो लाभ होता है उसकी गणना आयातों की तुलना में उसके निर्यातों की विनिमय दर में होने वाली वृद्धि से होती है। मिल ने अपने विवेचन में वस्तु व्यापार की शर्तों का उल्लेख किया है जिसकी बाद में जेवन्स ने आलोचना की और बताया कि वस्तु व्यापार की शर्तों का सम्बन्ध में उपयोगिता की अन्तिम दशा से है जबकि व्यापार में होने वाला कुल लाभ, जिसे व्यापार की शर्तों से मापा जाता है कुल उपयोगिता पर निर्भर रहता है।

बाद में अन्य अर्थशास्त्रियों ने व्यापार की शर्तों में अनेक संशोधन किये जिनमें मार्शल, एजवर्थ आदि का नाम मुख्य है।

व्यापार की शर्तों के प्रकार — जेकब वाइनर तथा मायर के अनुसार व्यापार की शर्तें निम्नलिखित हैं।

(1) वस्तु व्यापार शर्तें — व्यापार की वे शर्तें जो वस्तुओं और

Scanned with CamScanner

विनिमय अनुपात से सम्बन्धित है वस्तु व्यापार शर्तें कहलाती हैं ये मुख्य रूप से दो प्रकार की होती हैं –

(क) शुद्ध वस्तु विनिमय वाली व्यापार-शर्तें – किन्हीं दो निर्धारित समयों में आयात-कीमतों से निर्यात-कीमतों की तुलना के अनुपात को शुद्ध अदल बदल वाली व्यापार शर्तें कहते हैं संक्षेप में, शुद्ध व्यापार शर्तों से आशय आयात कीमतों और निर्यात कीमतों के अनुपात से है। सूत्र में इसे निम्न प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है

$$N = \frac{Px_1}{Pm_1} - \frac{Px_0}{Pm_0} \text{ अथवा } \frac{Px}{Pm} \times 100$$

यहां P = कीमत है X = निर्यात, M = आयात 0 = आधार वर्ष, 1 आगामी अवधि N = शुद्ध व्यापार की शर्तों को बताता है। यदि N बढ़ जाए, तब उस दशा में यह सूत्र प्रदर्शित करेगा कि केवल कीमतों के सम्बन्ध के आधार पर निर्यात की एक दी हुई मात्रा के बदले पहले से अधिक मात्रा आयात किया जाता है।

(ख) सकल वस्तु विनिमय व्यापार शर्तें – शुद्ध वस्तु विनिमय शर्तों की धारणा की कमियों को दूर करने लिए प्रो० टाॅसिग ने सकल वस्तु विनिमय व्यापार शर्तों की धारणा का विकास किया। प्रो० टॉसिग ने बताया कि हमें आयात व निर्यात कीमतों के अनुपात के स्थान पर आयात व निर्यात की वस्तुओं की भौतिक मात्राओं का अनुपात निकालकर सकल व्यापार की शर्तें निकालनी चाहिए इस प्रकार टॉसिग के अनुसार "एक देश की सकल वस्तु विनिमय व्यापार शर्तें उस देश के कुल आयात व निर्यात की भौतिक मात्राओं का अनुपात है"। सूत्र के रूप में Gross Barter Terms of Trade = $\frac{Qm}{Qx}$

यहां Qm = एक देश की कुल आयात की मात्रा, Qx = एक देश की कुल निर्यात की मात्रा है। दो समय अवधि में मध्य सकल वस्तु विनिमय व्यापार की शर्तों के परिवर्तन को देखने के लिए दोनों अवधियों के मध्य कुल आयात एवं निर्यात की भौतिक मात्राओं के तुलनात्मक अनुपात को निकाला जाता है। सूत्र में यह इस प्रकार है $\frac{Qm_1}{Qx_1} : \frac{Qm_0}{Qx_0}$

जबकि यहां Qm_0 = आधार वर्ष के आयात की मात्रा, Qm_1 = चालू वर्ष के आयात की मात्रा, Qx_0 आधार वर्ष के निर्यात की मात्रा Qx_1 = चालू वर्ष के निर्यात की मात्रा दर्शाता है

(2) आयगत व्यापार शर्तें – ए. एच इम्ला एवं जी. एम. डोरस ने आय के आधार पर व्यापार की शर्तों का निर्धारण करने हेतु एक विधि प्रस्तुत की है। उनके मतानुसार किसी देश में व्यक्तियों की आयात करने की क्षमता मुख्य रूप से उनकी आय पर निर्भर होती है।

आयगत व्यापार की शर्तों की परिभाषा इस प्रकार की जाती है "यह निर्यातों के मूल्यों के निर्देशांकों को आयातों की कीमतों

के निर्देशांक से विभाजित करने पर प्राप्त होता है। वस्तुतः यह निर्यातों के बदले उपलब्ध आयातों की मात्रा का ज्ञान कराती है। इस प्रकार यह शुद्ध अदल-बदल वाली व्यापार शर्तों का ही एक रूप है और इसे आयात करने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। देश की आयात क्षमता में निम्न हालतों में वृद्धि हो जाती है (a) जब निर्यात मूल्य Px बढ़ जाते हैं (b) जब निर्यात की मात्रा Ox में वृद्धि हो जाती है c) जब आयात मूल्य Pm कम हो जाते हैं।

यदि दो अवधियों में आयात की जाने वाली वस्तुओं की मात्रा ज्ञात हो तो हम निम्न विधि से व्यापार शर्तें ज्ञात कर सकते हैं

$Om_1 = \frac{Px_1 \times Ox_1}{Pm_1}$ यहाँ, Om_1 देश की वर्तमान आयात क्षमता Px_1 = वर्तमान निर्यात मूल्य, Ox_1 = वर्तमान निर्यात की मात्रा, Pm_1 वर्तमान आयात का मूल्य दर्शाता है। यह सूत्र देश की वर्तमान आयात-क्षमता को व्यक्त करता है। इसी प्रकार $Qmo = \frac{Px_0 \times Ox_0}{Pmo}$ यहाँ Qmo आधारवर्षीय आय क्षमता, Px_0 आधारवर्षीय निर्यात मूल्य Ox_0 आधारवर्षीय निर्यात की मात्रा Pmo आधारवर्षीय आयात की मात्रा दर्शाता है। अस्तु आयगत व्यापार-शर्तें = Om_1/Omo

यदि आयगत व्यापार शर्तें बढ़ जाये तो इससे यह पता चलेगा कि देश अपने निर्यातों के बदले आयातों की एक अधिक मात्रा प्राप्त कर सकता है। आयगत व्यापार-शर्तें सामान्यतया आयातों की उस मात्रा को नापती है जो कि निर्यातों द्वारा खरीदी जाती है।